HISTORY

B.A.(Hon's) PART-II

Paper-III (Mediaeval Indian History)

Unit-IV, (BAHMANI KINGDOM)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 31

"बहमनी राज्य के उत्थान एवं सांस्कृतिक योगदान"

Dr. Guddy Kumari (A.N.D College)

मोहम्मद तुगलक के समय में दक्षिण के विदेशी अमीरों ने विद्रोह किया और दौलताबाद पर अधिकार कर के हसन नामक एक सरदार को सुल्तान चुना। वह 1347 ई में अबुल हसन मुजफ्फर अलाउद्दीन बहमन शाह के नाम से सिंहासन पर बैठा। इस प्रकार अलाउद्दीन बहमन शाह ने 1347 ईस्वी में बहमनी राज्य की नींव डाली। बहमन शाह ने अपने को ईरान के इस्फन्दियार के बहादुर पुत्र बहमन का वंशज बताया था। बहमनी राज दक्षिण का एक महत्वपूर्ण राज था। दक्षिण भारत के काफी बड़े भाग पर प्राय: 200 वर्षों तक उसकी सता कायम रही।

अलाउद्दीन बहमन शाह एक योग्य शासक था। उसने अपने नाम के सिक्के चलाएं। राज्य को उसने 4 सुबों में विभाजित किया और अपने अफसरों के अनुसरण के लिए कुछ नियमों का विधान बनाया। गुलबर्गा को उसने अपने राज्य की राजधानी बनाया।

बहमनी शासक बिल्कुल स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश शासक था। हसन के उत्तराधिकारी मुहम्मद शाह प्रथम (1358–73) ई और फिरोज (1397–1422) ई दोनों ने कृष्णा एवं नदियों के मध्य की भूमि एवं रायचुर दोआब के लिए विजय नगर के राज्यों से युद्ध किया। फिरोज के उत्तराधिकारी अहमद शाह ने (1422–35) ई विजयनगर के राय एवं बरगल तथा कोंकन के सरदारों से युद्ध किया। इस युद्ध में उसने असंख्य हिंदुओं का वध किया और इस्लाम धर्म के प्रति अपनी इस अपूर्व सेवा के उपलक्ष में बलि की उपाधि धारण की। उसने गुलबर्गा को छोड़कर बोहर को अपनी राजधानी बनाया और उसे अनेक इमारतों से अलंकृत किया, किंतु मोहम्मद शाह तृतीय (1463–80) के शासनकाल में बहमनी राज्य के उन्नति के लक्षण दृष्टिगोचर होने लगे। उसका प्रधान वजीर महमूद गवा एक योग्य, सुचरित्र एवं एक कुशल राजनीतिज्ञ था। शासन सुधारो द्वारा उसने हुकूमत और अधिकार के बिखरी हुई डोर को समेटकर फिर से सुल्तान के अधिकार में कर दिया था। परंतु दक्षिणी अमीरों ने षड्यंत्र रच कर उसका विरोध किया और उसके तथा सुल्तान के बीच मतभेद पैदा कर दिया, परिणाम स्वरूप उसके शत्रु ने एक मिथ्याअपराध का आरोप लगाकर उसे प्राण दंड दिलवा दिया।

मुहम्मद के मृत्यु के बाद सन 1482 ईस्वी में उसका बेटा महमूद शाह गद्दी पर बैठा, परंतु वह बिल्कुल निकम्मा अयोग्य निकला। वह केवल नामधारी शासक रहा। वह दक्षिण अमीरों के हाथ का कठपुतली बन गया। वह कासिम वरीद उल मुमालिक के हाथों का खिलौना बन गया। महमूद शाह के मृत्यु के बाद कलीमुल्लाह बहमनी राज्य का अंतिम शासक बना। वह 1524 ई में सुल्तान के पद पर प्रतिष्ठित हुआ और 1526 ई में उसकी मृत्यु हो गई। कलीमुल्लाह के मृत्यु के बाद बहमनी राज्य पांच भागों में बट गया। जो इस प्रकार थे:–

1.बीजापुर का आदिलशाही राज्य

2.अहमदनगर का निजामशाही राज्य

3.बरार का इमाद शाही राज्य

4.गोलकुंडा का कुतुब शाही राज्य

5.बीदर का बरीद शाही राज्य।

बहमनी राज्य का इतिहास लगभग 175 वर्षों तक चला। इस वंश में 18 शासक हुए। जिसमें 5 की हत्या हुई, 3 पदच्युत किए गए, दो को अंधा बना कर मार दिया गया, दो असंयमी होने के कारण मर गए। शेष शासकों का अधिकांश समय पड़ोसी राज्य विजय नगर के साथ संघर्ष करने में व्यतीत हुआ।अधिकांश शासक निर्दयी एवं उत्पीड़क थे। एक इतिहासकार ने कहा है कि इस राज्य का इतिहास गृह युद्ध एवं पड़ोसियों के विरुद्ध विद्रोहों से निरंतर भरा पड़ा है। शासकों के अकर्मण्यता, सामंतों के परस्पर विद्रोह, हिंदुओं के प्रति उपेक्षा की भावना आर्थिक विषमता बहमनी राज्य के पतन के मुख्य कारण माना जाता है।

बहमनी राज्य में कला संस्कृति साहित्य एवं स्थापत्य कला का विकास:–

बहमनियों के काल में बहमनी राज्य में अनेक सुंदर महल, भवन, स्कूल, मस्जिद, दुर्ग आदि का निर्माण हुआ। कई नहरें बनवाई गई। फारसी और अरबी साहित्य को प्रोत्साहन दिया गया। शिक्षा का भी विस्तार हुआ।

बहमनी के सुल्तानों के द्वारा स्थापत्य कला के क्षेत्र में जो निर्माण का काम हुआ उसमें तुर्की मिस्त्री एवं इरानी तत्वों का मिश्रण था। गुलबर्गा और बीदर की मस्जिद में समन्वयवादी प्रवृत्ति का आभास मिलता है। मोहम्मद आदिल शाह का मकबरा जिसे गोल गुंबद कहा जाता है तुर्की कला का नमूना था। बहमनी राज्य के इमारतों में गुलबर्गा की जामा मस्जिद, दौलताबाद का मीनार और बीदर में महमूद गवा का मदरसा है। बहमनी शासकों को कठोर संघर्ष करना पड़ा था और अंततः भारतीय कला उन पर हावी हो गई। इस प्रकार बहमनी राज्य में कला संस्कृति साहित्य एवं स्थापत्य कला में काफी उन्नति देखने को मिलती है।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)